-: नगरी हो मधेपुर सी - श्री गुरुदेव भजन :-

नगरी हो मधेपुर सी, मंडप का कोना हो ।
जहाँ चरण हों गुरुदेव के, वहाँ मेरा ठिकाना हो ॥1॥

प्रातः की आरती हो, महाकाल का पूजन हो ।
संध्या की आरती से, दिन मेरा समापन हो ॥2॥

अभिषेक हो महादेव का, जहाँ हवन हो यजन हो ।
गुरुदेव का सानिध्य हो, श्रद्धा पुष्प अर्पण हो ॥3॥

ग्रंथों की रचना हो, आध्यात्म की गंगा हो ।
कलि काल के दोष जहाँ, निर्मल हो चंगा हो ॥4॥

कृपया पृष्ट पलटें

Author - Vivek Kr Karn © All Rights Reserved - For More Information - www.kapilkanan.org

महाकाल का पीठ जहाँ, महाकाली तप करती ।
विषय विष को जहाँ, विष से अमृत करती ॥5॥

जिन चरणों की धूलि से, त्रिताप छूट जाए ।
जीवन अमृत हो कर, सारे बंधन टूट जाए ॥6॥

गुरुदेव की वाणी से, मेरी नींद खुल जाए ।
निर्वाण सहज जिनके, चरणों में मिल जाए ॥7॥

सर्वस्व समर्पण हो, जीवन ये अर्पण हो ।
गुरुदेव के चरणों में, विवेक का (मेरा ये) वंदन हो ॥8॥

Author - Vivek Kr Karn © All Rights Reserved - For More Information - www.kapilkanan.org